त्रयोविंश खण्ड

काशीपुर-बागान में भक्तों के संग में

प्रथम परिच्छेद

(ईश्वर के लिए नरेन्द्र की व्याकुलता)

ठाकुर श्रीरामकृष्ण काशीपुर के बाग में ऊपर के उसी पूर्वपरिचित कमरे में बैठे हैं। दक्षिणेश्वर के श्री काली-मन्दिर से श्रीयुक्त राम चैटर्जी उनका कुशल-संवाद लेने आए थे। ठाकुर मणि के साथ वे ही सब बातें कर रहे हैं— बता रहे हैं— वहाँ पर (दक्षिणेश्वर में) क्या अब बहुत ठण्ड है?

आज 21 पौष, कृष्णा चतुर्दशी, सोमवार, 4 जनवरी, 1886 ईसवी। अपराह्न 4.00 बजे हैं।

नरेन्द्र आकर बैठ गए। ठाकुर उनको बीच-बीच में देख रहे हैं और उनकी ओर देखकर ईषत् (हल्का) हँस रहे हैं— जैसे उनका स्नेह उथला पड़ रहा है। मणि से संकेत करके बता रहे हैं— ''रोया था!'' ठाकुर कुछ चुप रहे। फिर और संकेत से मणि को बता रहे हैं— ''रोता-रोता घर से आया था!''

सब चुप किए हैं। अब नरेन्द्र बातें करते हैं—

नरेन्द्र— वहाँ पर आज जाऊँगा, सोच रहा हूँ।

श्रीरामकृष्ण— कहाँ?

नरेन्द्र— दक्षिणेश्वर में— बेल-तले पर। वहाँ पर रात को धूनि जलाऊँगा।

श्रीरामकृष्ण— ना; वे लोग (मैगजीन के मालिक) नहीं जलाने देंगे। पंचवटी तो सुन्दर जगह है— अनेक साधुओं ने ध्यान-जप किया है!

''किन्तु बड़ा शीत और अन्धकार है।''

सबके सब चुप हैं। ठाकुर फिर और बातें कर रहे हैं।

श्रीरामकृष्ण *(नरेन्द्र के प्रति, सहास्य)*— पढ़ेगा नहीं?

नरेन्द्र *(ठाकुर और मणि की ओर देखकर)*— एक औषध मिल जाए तो बचूँ, जिससे पढ़ा-लिखा जो कुछ भी है, सब भूल जाऊँ!

श्रीयुक्त (बूढ़े) गोपाल बैठे हैं। वे कहते हैं— मैं भी इसके संग में जाऊँगा। श्रीयुक्त कालीपद (घोष) ठाकुर के लिए अंगूर लाए थे। अंगूरों का बॉक्स ठाकुर की बगल में था। ठाकुर भक्तों में अंगूर वितरण कर रहे हैं। प्रथम तो नरेन्द्र को दिए— उसके पश्चात् हरि (बन्दर)-लूट की भाँति बिखेर दिए, भक्तों ने जिसने जैसे पाए, समेट लिए।

द्वितीय परिच्छेद

(ईश्वर के लिए श्रीयुक्त नरेन्द्र की व्याकुलता व तीव्र वैराग्य)

सन्ध्या हो गई। नरेन्द्र नीचे बैठकर तम्बाकू पी रहे हैं और अकेले में मणि से 'उनके प्राण किस प्रकार व्याकुल हैं', इसके बारे में बातें कर रहे हैं।

नरेन्द्र *(मणि के प्रति)*— गत शनिवार यहाँ पर ध्यान कर रहा था। हठात् छाती के भीतर किस प्रकार से कर उठा!

मणि— कुण्डलिनी जागरण!

नरेन्द्र— वही होगा, खूब बोध हुआ— इड़ा, पिंगला। हाजरा से कहा, छाती पर हाथ रखकर देखने के लिए।

''कल रविवार था, ऊपर जाकर इनके (ठाकुर के) संग मिला। इन्हें सब बताया।

''मैंने कहा, 'सबका ही हो गया है, मुझे कुछ दें। सबका ही हो गया, मेरा नहीं होगा'?''

मणि— उन्होंने तुम्हें क्या कहा?

नरेन्द्र— उन्होंने कहा, 'तू घर का थोड़ा-सा ठीक कर आ ना! सब होगा। तू क्या चाहता है?'

(Sri Ramakrishna and the Vedanta— नित्य, लीला दोनों ही ग्रहण)

"मैंने कहा— मेरी इच्छा है ऐसे तीन-चार दिन समाधिस्थ हुए रहूँ! कभी-कभी एक-एक बार खाने के लिए उठूँ।"

"वे बोले— तू तो बड़ा हीनबुद्धि है! इस अवस्था से भी ऊँची अवस्था है। तू ही तो गाना गाता है, 'जो कुछ है सो तू ही है'।"

मणि— हाँ, वे सर्वदा ही कहते हैं, जो समाधि से नीचे आकर देखता है— 'वे ही जीव-जगत, यह समस्त हुए हैं'। ईश्वरकोटि की ऐसी अवस्था हो सकती है। वे कहते हैं, जीवकोटि यदि समाधि-अवस्था लाभ करे तो फिर नीचे नहीं उतर सकते।

नरेन्द्र— वे कहते हैं— तू घर का थोड़ा-सा ठीक कर आ, समाधि-लाभ की अवस्था की अपेक्षा भी "ऊँचु" अवस्था हो सकेगी।

"आज सुबह घर गया था। सब ही डाँटने (बकने) लगे— और बोले, क्या हो-हो करता हुआ फिर रहा है? कानून (लॉ) का एग्जाम (इमत्हिान) इतना निकट है, पढ़ना-लिखना नहीं, हो-हो करता फिरता है।"

मणि— तुम्हारी माँ ने कुछ कहा?

नरेन्द्र— नहीं, वे खिलाने के लिए परेशान थीं, हरिण का मांस था— खा लिया— किन्तु खाने की इच्छा नहीं थी।

मणि— उसके बाद?

नरेन्द्र— दीदी-माँ के घर, उसी पढ़ने के कमरे में पढ़ने गया। पढ़ने लगने पर पढ़ते हुए एक विशेष आतंक हुआ— पढ़ाई जैसे एक भय की वस्तु है! छाती आटुपाटु करने लगी!— ऐसा रोना कभी भी नहीं रोया।

"तत्पश्चात् किताबें-शिताबें फेंक कर दौड़ा! मार्ग में भागा। जूता-शूता मार्ग में कहाँ एक ओर पड़ा रह गया! फूस के स्तूप के पास से जा रहा

था— सारे शरीर में फूस ही फूस हो गया— मैं दौड़ रहा हूँ— काशीपुर के रास्ते पर!''

नरेन्द्र थोड़ा चुप हैं। फिर और बातें कह रहे हैं।

नरेन्द्र— विवेक चूड़ामणि सुनकर और भी मन खराब हो गया है। शंकराचार्य कहते हैं— कि ये तीन विशेष वस्तुएँ अनेक तपस्या, अनेक भाग्य से मिलती हैं— मनुष्यत्वम्, मुमुक्षुत्वम्, महापुरुषसंश्रयः।

''सोचने लगा— मेरी तो तीनों ही हो गई हैं! अनेक तपस्या के फल से मनुष्य-जन्म हुआ है, अनेक तपस्या के फल से मुक्ति की इच्छा हुई है— और अनेक तपस्या के फल से ऐसे महापुरुष का संग-लाभ हुआ है।''

मणि— आहा!

नरेन्द्र— संसार और अच्छा नहीं लगता। संसार में जो भी हैं वे भी अच्छे नहीं लगते, दो-एक भक्तों को छोड़।

नरेन्द्र तुरन्त फिर चुप हो गए। नरेन्द्र के भीतर तीव्र वैराग्य है। अभी तक भी प्राण आटुपाटु (उछल-कूद) कर रहा है। नरेन्द्र फिर और बातें कर रहे हैं।

नरेन्द्र *(मणि के प्रति)*— आप लोगों को शान्ति हो गई है, मेरा प्राण अस्थिर हो रहा है! आप लोग ही धन्य हैं!

मणि ने कुछ उत्तर नहीं दिया, चुप हैं। सोच रहे हैं, ठाकुर ने कहा था, ईश्वर के लिए व्याकुल होना चाहिए, तभी ईश्वर-दर्शन होता है। सन्ध्या के बाद ही मणि ऊपर के कमरे में गए। देखा, ठाकुर निद्रित हैं।

रात्रि के प्रायः 9 हैं। ठाकुर के पास हैं निरंजन, शशी। ठाकुर जाग गए हैं। ठहर-ठहर कर नरेन्द्र की बातें ही कह रहे हैं।

श्रीरामकृष्ण— नरेन्द्र की अवस्था कैसी आश्चर्यपूर्ण! देखो, यही नरेन्द्र पहले साकार नहीं मानता था! इसका प्राण किस प्रकार से आटुपाटु (छटपटाना, तड़पना) कर रहा है, देखते हो! वही जो किसी ने पूछा था, ईश्वर को कैसे पाया जाता है? गुरु ने कहा, आओ मेरे संग; तुम्हें दिखला दूँ क्या होने पर

ईश्वर मिलते हैं। यह कहकर एक तालाब में ले जाकर उसे जल में डुबा कर पकड़ लिया! कुछ क्षण पश्चात् उसको छोड़कर शिष्य से पूछा, 'तुम्हारा प्राण कैसे हो रहा था?' वह बोला, 'प्राण जाय-जाय हो रहा था।'

''ईश्वर के लिए प्राण छटपट करने लगने पर समझोगे कि दर्शन में और देर नहीं है। अरुण उदय होने पर— पूर्व दिशा लाल होने पर— पता लग जाता है सूर्य उदय होगा।''

आज ठाकुर का असुख बढ़ गया है। शरीर का इतना कष्ट है। तब भी नरेन्द्र के सम्बन्ध में ये सब बातें— संकेत करके बता रहे हैं।

नरेन्द्र इसी रात को ही दक्षिणेश्वर चले गए। गम्भीर अन्धकार— अमावस्या लग गई है। नरेन्द्र के संग में दो-एक भक्त हैं। मणि रात को बागान में ही हैं। स्वप्न में देख रहे हैं, वे संन्यासी-मण्डल के भीतर बैठे हुए हैं।

तृतीय परिच्छेद

(भक्तों का तीव्र वैराग्य— संसार और नरक-यन्त्रणा)

अगला दिन मंगलवार 5 जनवरी, 22 पौष। काफी देर अमावस्या है। चार बज गए हैं। ठाकुर श्रीरामकृष्ण शय्या पर बैठे हैं, मणि के साथ अकेले में बातें कर रहे हैं।

श्रीरामकृष्ण— क्षीरोद यदि श्री गंगासागर जाए तो फिर तुम एक कम्बल खरीद देना।

मणि— जो आज्ञा।

ठाकुर थोड़ा-सा चुप हैं। फिर और बातें कर रहे हैं।

श्रीरामकृष्ण— अच्छा, लड़कों को यह क्या हो रहा है? कोई श्रीक्षेत्र भाग रहा है— कोई गंगासागर!

''घर छोड़कर सब आ रहे हैं। देखो ना, नरेन्द्र! तीव्र वैराग्य हो जाने

पर संसार छोटा कुआँ बोध होता है, आत्मीयजन काल-साँप बोध होते हैं।

मणि— जी, संसार में बड़ी यन्त्रणा है!

श्रीरामकृष्ण— नरक-यन्त्रणा! जन्म से। देख रहे हो ना— स्त्री-पुत्र लेकर कैसी यन्त्रणा है!

मणि— जी हाँ। और आपने कहा था, वे लोग (जिन्होंने संसार में प्रवेश ही नहीं किया) उन्हें लेना-देना नहीं; लेने-देने के लिए अटके रहना पड़ता है।

श्रीरामकृष्ण— देख रहे हो ना— निरंजन को! 'अपना यह ले, मेरा यह दे'—बस! और कोई सम्पर्क नहीं। पीछे खींच नहीं!

''कामिनी-काञ्चन ही संसार है। देखो ना, रुपया होते ही बाँधने (जोड़ने) की इच्छा होती है।''

मणि ने हो-हो करके हँस दिया। ठाकुर भी हँसे।

मणि— रुपया निकालते हुए अनेक हिसाब आता है। *(दोनों का हास्य)*। किन्तु दक्षिणेश्वर में कहा था, त्रिगुणातीत होकर संसार में रह सकने पर एक और हो जाता है।

श्रीरामकृष्ण— हाँ, बालक के जैसा।

मणि— जी, किन्तु बड़ा कठिन है, बड़ी शक्ति चाहिए।

ठाकुर कुछ चुप किए हैं।

मणि— कल वे लोग ध्यान करने गए। मैंने स्वप्न देखा था।

श्रीरामकृष्ण— क्या देखा?

मणि— देखा, जैसे नरेन्द्र आदि संन्यासी हो गए हैं— धूनि जलाकर बैठे हैं। मैं भी उनके मध्य बैठा हुआ हूँ। वे तम्बाकू पी कर धुआँ मुख से निकाल रहे हैं, मैंने कहा, गाँजे के धुएँ की गन्ध है।

(संन्यासी कौन— ठाकुर की पीड़ा और बालक की अवस्था)

श्रीरामकृष्ण— मन से त्याग होने पर ही हुआ, वह होने पर ही संन्यासी है।

ठाकुर चुप किए हैं। फिर और बातें कर रहे हैं।

श्रीरामकृष्ण— किन्तु वासना में आगुन देनी होती है तभी तो!

मणि— बड़ेबाजार के मारवाड़ियों के पण्डित जी से आपने कहा था मेरी 'भक्ति-कामना' है। तो भक्ति-कामना शायद कामनाओं के मध्य नहीं है?

श्रीरामकृष्ण— जैसे हिंचे साग सागों के बीच में नहीं है— पित्त दमन करता है।

"अच्छा, इतना आनन्द, भाव— यह समस्त कहाँ गया?"

मणि— बोध होता है गीता में जो त्रिगुणातीत की बात कही गई है, वही अवस्था हो गई है। सत्व, रज, तम गुण अपना-अपना कार्य कर रहे हैं, आप स्वयं निर्लिप्त हैं— सत्त्व गुण से भी निर्लिप्त।

श्रीरामकृष्ण— हाँ, बालक की अवस्था में रखा हुआ है।

"अच्छा, देह क्या इस बार नहीं रहेगी?"

ठाकुर और मणि चुप किए हुए हैं। नरेन्द्र नीचे से आए। एक बार घर जाएँगे। बन्दोबस्त करके आएँगे।

पिता की परलोकप्राप्ति पर उनकी माँ और भाईगण अति कष्ट में हैं— बीच-बीच में अन्नकष्ट है। नरेन्द्र एकमात्र उनका भरोसा हैं। वे रोजगार करके उन्हें खिलाएँगे। किन्तु नरेन्द्र का लॉ (कानून) की परीक्षा देना नहीं हुआ। अब है तीव्र वैराग्य! जभी आज घर का कुछ बन्दोबस्त करने के लिए कलकत्ता जा रहे हैं। एक मित्र उन्हें एक सौ रुपया उधार देंगे। उसी रुपये से घर के तीन मास के खाने का जुगाड़ करके आएँगे।

नरेन्द्र— चलूँ घर एक बार। *(मणि के प्रति)* महिम चक्रवर्ती के घर से होकर जा रहा हूँ, आप चलेंगे क्या?

मणि की जाने की इच्छा नहीं है, ठाकुर उनकी ओर ताक कर नरेन्द्र से

पूछ रहे हैं—

''क्यों?''

नरेन्द्र— उसी रास्ते से जा रहा हूँ, उनके संग बैठकर थोड़ी बातचीत करूँगा।

ठाकुर एक दृष्टि से नरेन्द्र को देख रहे हैं।

नरेन्द्र— यहाँ के एक मित्र ने कहा है, मुझे एक सौ रुपया उधार देंगे। उसी रुपये से घर का तीन मास का बन्दोबस्त करके आऊँगा।

ठाकुर चुप हैं। मणि की ओर देखा।

मणि *(नरेन्द्र से)*— नहीं, तुम लोग चलो— मैं पीछे आऊँगा।